पाठ - जलाते चलो

शब्दार्थ –

जलाते चलो – प्रकाशित करना
स्नेह – प्रेम
धरा – धरती
अँधेरा – अँधकार, निराशा, बुराई
निहित – विध्यमान
विश्व – संसार
दिवस – दिन
निशा – रात

1) जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर ---------- घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।

व्याख्या – कवि कहता है कि यदि हम दिए जलाते रहेंगे तो कभी न कभी इस धरती का अन्धकार अवश्य मिट जाएगा। कवि के अनुसार ज्ञान और प्रेम से कभी न कभी तो इस धरती की नफ़रत और बुराइयाँ समाप्त होंगी। कवि कहता है कि आज विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि अमावस्या जैसी अँधेरी रात में पूर्णिमा जैसा उजाला करना संभव है। विज्ञान ने अनेक सुख-सुविधाओं का निर्माण किया है। परन्तु इतना उन्नत होने पर भी आज विश्व में अमावस्या जैसा अन्धकार फैला हुआ है, अर्थात प्रकृति से लगातार खिलवाड़ करने व् विनाशकारी हथियारों के निर्माण के कारण हर ओर दुःख व् निराशा का माहौल है।

शब्दार्थ –
विधुत – बिजली
पथ – रास्ता
तिमिर – अँधेरा
चुनौती – ललकार
सरित – नदी

2) बिना स्नेह विधुत-दिये जल रहे जो ---------- बना दीप की नाव तैयार की थी।

व्याख्या – कवि कहता है कि ये जो बिना प्रेम के बिजली के दिए जल रहे हैं इन्हें बुझा देना चाहिए क्योंकि इनसे रास्ता नहीं मिल सकेगा। कहने का आशय यह है कि आज विज्ञान ने रोशनी फैलाने वाले कई उपकरण बना दिए हैं। उन उपकरणों से कृत्रिम प्रकाश तो मिल सकता है किन्तु सही रास्ता दिखाने वाला ज्ञान रूपी प्रकाश नहीं मिल सकता। इसलिए कवि उन्हें बुझा कर ज्ञान रूपी प्रकाश वाले दीपक जलाने को कह रहा है। कहने का आशय यह है कि प्राचीन काल से हम मनुष्यों ने ही तो अज्ञान रूपी अन्धकार की चुनौती स्वीकार की है। अज्ञान रूपी अन्धकार व् निराशा की नदी को पार करने के लिए प्रेम व् आशा रूपी नाव भी हम मनुष्यों ने ही तैयार की थी।

शब्दार्थ –
निरंतर – लगातार
शिला – पत्थर, चटान
अनगिनत – जिनकी कोई गिनती न हो

साक्षी – गवाह
पवन – हवा

3) बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर---------- अनगिन तुम्हारे पवन ने बुझाए।

व्याख्या – कवि कहता है कि ज्ञान के रास्ते पर चलते-चलते एक न एक दिन अज्ञान से मुक्ति मिल ही जाती है इसलिए कवि लगातार ज्ञान के पथ पर चलने को कह रहा है। प्राचीन काल से अज्ञान, स्वार्थ व् लालच जैसी बुराइयों से परिपूर्ण अन्धकार की चट्टान पर तुमने ज्ञान व् संघर्ष के दिप जलाए हैं। इस बात का समय गवाह रहा है कि तुम्हारे उन ज्ञान व् संघर्ष के दीयों को अज्ञान, स्वार्थ व् लालच रूपी हवाओं ने बुझाया है। कहने का आशय यह है कि ज्ञान व् संघर्ष को अज्ञान, लालच, स्वार्थ जैसी बुराइयाँ अक्सर मिटाने का प्रयास करती रहती हैं।